परीक्षा में नकल के कारणों का विश्लेषण एवं निदान

अश्वनी कुमार गौड़*

बच्चों ने क्या सीखा यह जानने के लिए मूल्याँकन करना आवश्यक है। परीक्षाएँ मूल्याँकन प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण जरिया है। परन्तु परीक्षाओं में विद्यार्थियों द्वारा नकल करने से मूल्याँकन प्रक्रिया निष्प्रभावी हो जाती है और बच्चों का सही निष्पादन नहीं हो पाता। बच्चे नकल क्यों करते हैं, इसके लिए कौन-कौन से कारण जिम्मेदार हैं और छात्रों को नकल करने से कैसे रोका जा सकता है—आदि मुद्दों पर चर्चा की गई है इस शोध परक लेख में।

हमारे सम्मुख बालक के सही मूल्याँकन का लक्ष्य होता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम परीक्षाओं का आयोजन करते हैं, किन्तु आज छात्रों द्वारा परीक्षा में नकल करना एक चिंतनीय विषय ही नहीं अपितु शिक्षा में व्याप्त एक बीमारी है। इससे मूल्याँकन प्रक्रिया ही निष्प्रभावी हो जाती है और शिक्षा का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। इससे भी अधिक बुरी बात यह है कि इससे कक्षा में होने वाली पढ़ाई व परीक्षा का तरीका ही प्रतिलक्षित नहीं होता बल्कि हमारे घर व आसपास का वातावरण क्या है, यह भी दिखाई नहीं देता है। इससे शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था की विश्वसनीयता पर सन्देह पैदा होता है और इससे जुड़े लोगों की आस्था पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। परीक्षा में नकल होने के कई कारण हैं। ये विद्यार्थी की अंक प्रतिशत बढ़ाने की इच्छा से लेकर परीक्षा कराने वाले अधिकारियों की लापरवाही और ढील देने तक फैले हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने परीक्षा में नकल करने से संबंधित छात्र, अभिभावक, साथी, अध्यापक, प्रश्नपत्र, परीक्षा व्यवस्था, प्रशासन एवं घर का पर्यावरण आदि कारणों पर विचार किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों द्वारा परीक्षा में नकल करने के कारणों का अध्ययन करना।

**एसोसियेट प्रोफ़ेसर* (शिक्षा), दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा. (उ. प्र.)

2. माध्यमिक स्तर के छात्रों द्वारा नकल सामग्री रखने वाली छिपी जगहों का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों की नकल की प्रवृत्ति के लिए प्रेरक तत्वों का अध्ययन करना।
4. नकल की प्रवृत्ति को रोकने हेतु वांछित सुझावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की विधि

शोधकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखे हुये वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यायदर्श

इस अध्ययन में शोधकर्ता ने Perposive Non Random Sampling विधि द्वारा आगरा मण्डल के दसवीं कक्षा के उन 100 छात्रों को सम्मिलित किया जो नकल करते पकड़े गये या जिन्होंने नकल करना स्वीकार किया।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा शोधकर्त्ता ने छात्रों, साथियों, अभिभावकों एव अध्यापकों से प्रश्नपत्र, परीक्षा व्यवस्था, प्रशासन एवं घर के पर्यावरण से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे।

अध्ययन के निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष ज्ञात करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण करके नकल की प्रवृत्ति के कारण ज्ञात किये गये जिनकी विवेचना शोधकर्त्ता द्वारा निम्नांकित क्रम में की गयी है।

1. छात्र द्वारा अपने अध्ययन पर पर्याप्त समय न देना

38% छात्रों ने बताया कि वे एक से दो घंटा अपनी दिनचर्या में अध्ययन के लिए सुरक्षित रखते हैं। 26% छात्रों ने बताया कि वे दो घंटे से चार घंटे अपने घर अध्ययन करते हैं। चार से छः घंटे अध्ययन करने वाले छात्रों का प्रतिशत 30 रहा। 6% छात्रों ने बताया कि वे घर पर बिल्कुल ही अध्ययन नहीं करते हैं। कम अध्ययन करने से छात्र की कमजोरी बनी रहती है और यही कमजोरी उसे नकल की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है।

2. छात्रों में भय का अभाव

32% छात्रों ने यह स्वीकारा कि वे नकल करते समय भय का अनुभव नहीं करते हैं। हम देखते हैं कि आज का परीक्षार्थी अनुशासनहीन होता चला जा रहा है। नैतिकता से वह बहुत परे है। अपने से बड़ों का सम्मान करना जैसे व्यावहारिक गुण से वह वंचित है। अपने अध्यापक द्वारा उसे नुकसान नहीं पहुँचाया जाएगा, इस बात से वह निश्चिन्त है। अतः निडर हो परीक्षा भवन में वह नकल के सभी साधन अपनाता है।

3. छात्रों द्वारा नियमित कक्षाओं में अनुपस्थित रहना

52% छात्रों ने बताया कि उनके अध्यापक नियमित रूप से कक्षा में नहीं आते हैं। 30% छात्रों ने बताया कि उनके अध्यापक उन्हें प्रभावशाली ढंग से अध्यापन नहीं कराते हैं। अच्छा अध्यापन छात्र में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करता है और एक नीरस अध्यापक अध्ययन के प्रति नीरसता उत्पन्न करता है परिणामस्वरूप छात्र नियमित कालांशों में अनुपस्थित रहता है। इस कारण उसकी विषयगत कमजोरी बढ़ती जाती है और वह परीक्षा में नकल का सहारा ले, उत्तीर्ण होना ही अपना उद्देश्य बना लेता है। नियमित रूप से

कक्षा में उपस्थित नहीं रहने वाले छात्रों का 18% है।

4. छात्रों का घर के कार्यों में संलग्न होना

शत्-प्रतिशत छात्रों ने घर के कार्यों में संलग्न होना स्वीकार किया है। प्राप्त उत्तरों के विश्लेषण के आधार पर छात्र घर पर निम्नलिखित कार्यों में संलग्न पाए गए हैं–

1. घर पर पानी भरना।
2. अनाज लाना एवं अनाज पिसाना।
3. खाना बनाना।
4. खेती एवं व्यापार में माता-पिता को सहयोग देना।
5. पशुओं की देखभाल करना।
6. घरेलू सामान खरीदना।
7. अखबार बेचना।

इस कारण छात्र को अपने अध्ययन के लिए समय निकाल पाने में कठिनाई होती है। परीक्षा की तैयारी के लिए वह अपना मानस नहीं बना पाता है। परिणामस्वरूप परीक्षा भवन में वह नकल का सहारा लेता है।

5. अभिभावक

हालांकि 8% छात्रों ने यह बताया कि उनके अभिभावक भी उनकी इस प्रवृत्ति में सक्रिय भागीदार हैं। हम देखते हैं कि कुछ पहुँच वाले अभिभावक अपने बच्चे की परीक्षा भवन में बैठक व्यवस्था से लेकर संबंधित परीक्षा भवन में कक्षक की नियुक्ति तक अपने प्रभाव को बनाए रखते हैं। वे अपने परिचित अध्यापकों से बराबर सम्पर्क बनाए रखते हैं। साथ ही प्रायोगिक परीक्षाओं में अभिभावक इन्टरनल एवं एक्सटरन मूल्याँकनकर्त्ताओं तक भी अपनी पहुँच का माध्यम ढूँढ ही निकालते हैं। 26% छात्रों ने बताया कि उनके अभिभावक उन्हें नकल करने को कहते हैं। परिणामस्वरूप बालक नकल की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होता है।

6. मार्गदर्शन का अभाव

26% छात्रों ने बताया कि घर पर उन्हें उनके अध्ययन में मार्गदर्शन देने वालों का अभाव है। अभिभावक अपने बालक को विद्यालय में प्रवेश दिला अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। अशिक्षित की बात तो दूर रही, शिक्षित होते हुए भी समयाभाव के कारण अभिभावक अपने बालक के अध्ययन की ओर ध्यान नहीं दे पाते। अतः अपने अध्ययन में सही मार्गदर्शन के अभाव में छात्र नकल करने को मजबूर हो जाता है।

7. घर पर पढ़ने की सुविधा एवं अध्ययन-सामग्री का अभाव

हमारे यहाँ अधिकाँशतया जीवन निर्वाह के साधनों का अभाव है। परिवार अपने सीमित आर्थिक साधनों में अपने बालकों को पर्याप्त शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने में असमर्थ रहता है। विद्यालय जाने वाला बालक इससे प्रभावित होता है। वह अध्ययन-कक्ष एवं अध्ययन-सामग्री से वंचित रहता है। 34% छात्रों ने बताया कि घर पर उन्हें पढ़ने की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। परिणामस्वरूप बालक पढ़ाई में कमजोर होता है और वह परीक्षा में नकल करता है।

8. साथी

82% छात्रों ने बताया कि वे नकल अपने साथी के सहयोग से करते हैं। 32% छात्रों ने बताया कि वे नकल की सामग्री अपने साथी से प्राप्त करते हैं। 20% छात्रों ने स्वीकार किया कि वे नकल

अनुकरण के आधार पर करते हैं। अपने साथी को लगातार नकल में सफलता प्राप्त करते देख उसका मन लालायित हो ही उठता है। इससे परीक्षा भवन के अधिकाँश छात्र नकल की ओर प्रेरित होते हैं।

9. अध्यापक

32% छात्रों ने बताया कि उनके अध्यापक उन्हें नकल करते समय परीक्षा भवन में नहीं पकड़ते हैं। 18% छात्रों ने बताया कि नकल करने में अध्यापक भी उनकी सहायता करते हैं। अनुभव के आधार पर ऐसा कार्य अध्यापक अपना कोर्स समय पर पूर्ण न करा पाने की वजह से, निजी स्वार्थ की वजह से या अपने मधुर सामाजिक सम्पर्कों की वजह से ही करते हैं। कई अध्यापक परोपकारी सर्वहिताय व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हैं। ऐसा कर वे छात्र को नकल के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

10. प्रश्न-पत्रों का दोषपूर्ण होना

82% छात्रों ने बताया कि प्रश्न पत्र के 'अ' भाग में वे नकल करने से सफलता प्राप्त करते हैं। 40% छात्रों ने नकल संकेतों के सहारे करना स्वीकार किया है। ऐसा होने पर 'अ' भाग की उपयोगिता समाप्त-सी हो जाती है और वह छात्रों को नकल की प्रवृत्ति में सहयोगी के रूप में परिवर्तित हो जाती है। 42% छात्रों ने स्वीकारा कि उन्हें सीधे प्रश्नों में नकल करने में सफलता मिलती है।

11. बैठक व्यवस्था

36% छात्रों ने बताया कि परीक्षा भवन में उनके बैठने की उचित व्यवस्था नहीं होती है। 40% छात्रों ने बताया कि उन्हें परीक्षा भवन में पर्याप्त दूरी पर नहीं बैठाया जाता है। बैठक व्यवस्था में प्रत्येक छात्र के बीच अपेक्षित दूरी वाँछनीय है, किन्तु इसका अभाव पाया जाता है। अत: अनुचित बैठक व्यवस्था छात्र को नकल के लिए प्रेरित करती है।

12. प्रशासन की लापरवाही

40% छात्रों ने बताया कि उन्हें परीक्षा नियमों की जानकारी नहीं दी जाती है। 30% छात्रों ने बताया कि उन्हें नकल करने से नहीं रोका जाता है। 60% छात्रों ने बताया कि उन्हें नकल करते हुए प्रधानाध्यापक द्वारा नहीं पकड़ा जाता है। वैसे 46% छात्रों ने नकल करते हुए पकड़े जाना स्वीकार किया है, किन्तु 30% छात्रों ने ही यह बताया कि पकड़े जाने का प्रभाव उनके परीक्षा परिणाम पर पड़ा। प्राप्त उत्तरों से विदित हुआ कि परीक्षक अपने ही स्तर पर उन्हें साधारण दण्ड देकर छोड़ देते हैं। अनुभव के आधार पर इसका कारण कुछ परीक्षकों की यह आशा होती है कि उनका अधिकारी इस संबंध में उनसे भी कहीं अधिक सहानुभूतिपूर्वक विचार करता है या कुछ इस संबंध में प्रत्यक्ष रूप से सामने आना नहीं चाहते। अत: प्रशासन द्वारा परीक्षार्थी के साथ सहानुभूति रखना, परीक्षार्थी को नकल के लिए प्रोत्साहन देना हो जाता है।

13. छिपी जगहों पर नकल की सामग्री रखना

छात्र छिपी हुई जगहों पर नकल की सामग्री रखते हैं जिनसे वे आसानी से नहीं पकड़े जाते। नहीं पकड़े जाने पर वे इस प्रवृत्ति को दोहराते रहते हैं। छात्रों के पूछे जाने पर जानकारी मिली

कि वे नकल संबंधी सामग्री निम्नलिखित स्थानों पर रखते हैं या लिखते हैं–

1. शर्ट/कमीज़ की कालर के अन्दर
2. पैन या पैन के खोले के अन्दर
3. अंगूठी के अंदर
4. मौजे या जूतों के अन्दर
5. छोटी प्लास्टिक की थैली में डालकर मुँह के अन्दर
6. पैंट की मोरी के अन्दर
7. जेब या चोर जेब के अन्दर
8. नीकर की जेब के अन्दर
9. कमीज के नीचे तुरपाई वाले स्थान के अन्दर
10. कमर के बेल्ट के नीचे
11. घड़ी की बेल्ट के नीचे
12. कान में अटका कर बड़े बालों को ऊपर ले जाकर
13. दीवार पर पहले लिखकर
14. पैड पर या इन्स्ट्रूमेंट बाक्स में लिखकर
15. गणित के सूत्र उत्तर-पुस्तिका देते ही रफ़ कार्य वाले स्थान पर लिखकर
16. पुराने प्रश्न-पत्र की छपाई के बीच पेन्सिल से लिखकर
17. प्रश्न-पत्र पर लिखकर उसका आदान-प्रदान करते हुए
18. जूतों के नीचे चिपका कर
19. कमीज के बटन के पास अटका कर
20. टेबुल या पास में खिड़की आदि के किसी छेद में अटकाकर।
21. उत्तर-पुस्तिका और प्रश्न-पत्र के नीचे बीच में।

प्राप्त आँकड़ों के आधार पर नकल की प्रवृत्ति के लिए दोषी वर्गवार स्थिति निम्नानुसार है–

नकल के लिए दोषी कारक		*स्वीकारने वाले छात्रों का प्रतिशत*
1.	छात्र	**48% छात्रों ने**
2.	अभिभावक	**16% छात्रों ने**
3.	साथी	**40% छात्रों ने**
4.	अध्यापक	**46% छात्रों ने**
5.	प्रश्नपत्र	**46% छात्रों ने**
6.	परीक्षा व्यवस्था	**35% छात्रों ने**
7.	प्रशासन	**58% छात्रों ने**
8.	घर का पर्यावरण	**20% छात्रों ने**

तालिका

उपर्युक्त तालिका के अनुसार निष्कर्ष निकलता है कि नकल के प्रेरक तत्व क्रमानुसार निम्नलिखित हैं–

1. प्रशासन

सबसे पहला प्रेरक तत्व प्रशासन है जो अपनी गलत नीतियों, निर्णयों, ढीली एवं अनियोजित योजनाओं द्वारा छात्र को नकल के लिए प्रेरित करता है।

2. छात्र

दूसरे क्रम पर छात्र स्वयं आते हैं जो आदतन परीक्षा में उत्तीर्ण होने, अच्छे अंक प्राप्त करने एवं अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए नकल करते हैं।

3. अध्यापक एवं प्रश्न-पत्र

तीसरा स्थान अध्यापक एवं प्रश्न-पत्र का है जिनका प्रभाव बराबर-बराबर रहता है। अध्यापक

की ढीली, टालमटोल नीति एवं उसकी कर्त्तव्य-निष्ठा में कमी नकल की प्रवृत्ति को प्रभावी करते हैं। प्रश्न-पत्र भी स्वयं ऐसे ही होते हैं जिनके कारण छात्र आसानी से नकल कर लेते हैं।

4. साथी

चौथा स्थान साथी वर्ग का है। साथी के ही अनुकरण एवं सहयोग से प्रभावित होकर छात्र नकल करते हैं।

5. परीक्षा व्यवस्था

पाँचवा स्थान परीक्षा व्यवस्था का है। घर का पर्यावरण एवं अभिभावक नकल की प्रवृत्ति के लिए कम दोषी ठहरे हैं इनके प्रभाव का प्रतिशत न्यून है।

दूसरे शब्दों में हम निष्कर्ष को दो भागों में बाँट सकते हैं।

1. प्रत्यक्ष

जिसमें स्वयं छात्र भागीदार होता है।

2. अप्रत्यक्ष

जिसमें प्रशासन, अध्यापक, प्रश्न-पत्र, साथी, परीक्षा व्यवस्था, घर का पर्यावरण एवं अभिभावक आते हैं।

प्रत्यक्ष प्रभाव 15.53% एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव 84.47% रहा है। अतः अप्रत्यक्ष प्रभाव अधिक दोषी है।

सुझाव

1. स्कूली शिक्षा में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों में इस तरह सुधार लाया जाए कि विद्यार्थियों पर पढ़ाई का बोझ न पड़े।
2. परीक्षा व्यवस्था को लचीला बनाया जाए। प्रश्नों के स्वरूप को बदला जाए जिससे विद्यार्थियों को रटने की आवश्यकता न हो वरन् वे अपने सन्दर्भो के अनुसार स्वयं ही उत्तर लिख सकें।
3. प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक अपने शैक्षिक और नैतिक दायित्वों का निर्वाह करें।
4. खुली पुस्तक परीक्षाओं की व्यवस्था की जाए। परीक्षा के कुछ अन्य तरीके भी अपनाये जाएँ। इस विषय में छात्र, अध्यापक एवं अभिभावकों में विचार-विमर्श हो।
5. कक्षागत अध्यापन को प्रभावी बनाया जाए।
6. छात्रों के सही मार्गदर्शन हेतु विद्यालय में अध्ययन कक्ष स्थापित किये जाएँ जिनमें उन्हें शैक्षिक मार्गदर्शन दिया जाए।
7. अध्यापक-अभिभावक संघ को प्रभावी बनाया जाए।
8. छात्र को आत्मचिंतन के अवसर प्रदान किये जाएँ।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि छात्रों में व्याप्त नकल की प्रवृत्ति का निराकरण करना मूलभूत आवश्यकता है इसके बिना हमारे शिक्षण उद्देश्यों को क्षति पहुँचती है। अतः हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए।